पाठ–10

घर में वापसी

कवि– सुदामा पांडेय (धूमिल) प्रगतिवादी प्रयोगवादी

कवि परिचय– साठोत्तरी कविता के सशक्त हस्ताक्षर धूमिल का पूरा नाम सुदामा पांडेय 'धूमिल' है। इनका जन्म 9 नवम्बर 1936 को वाराणसी जिले के खेवली गाँव में हुआ। बालक सुदामा ने सन् 1953 में हाई स्कूल परीक्षा पास की। सन् 1950 में आई.टी.आई. वाराणसी से विद्युत–डिप्लोमा किया और वहीं अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। असमय ही ब्रेन–टयूमर हो जाने के कारण 10 फरवरी 1975 को आपका स्वर्गवास हो गया।

प्रमुख रचनाएँ – बाँसुरी जल गई, ससंद से सड़क तक, कल सुनना मुझे और सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र। धूमिल को मरणोपरान्त साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

काव्यगत विशेषताएँ – सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' 'नई कविता' के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनके काव्य में एक विशेष प्रकार का गँवईपन दिखाई देता है धूमिल की कविता में पंरपरा, सभ्यता, शालीनता और भद्रता का विरोध है। इन्होंने व्यंग्यों के माध्यम से उपहास, झुंझलाहट और पीड़ा को व्यक्त किया है।

भाषा शैली – इनके काव्य में मुहावरें, लोकोंक्तियों और सूक्तियों का सुन्दर प्रयोग मिलता है। सवांद–शैली के प्रयोग से भाषा सशक्त हो गई हैं । लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता इनकी भाषा की विशेषता है भाषा सरल और सहज है। इन्होंने मुक्त छंदों का प्रयोग किया हैं।

पाठ परिचय–'घर की वापसी' धूमिल जी की गरीबी से संघर्ष कर रहे परिवार की दुख भरी कविता है। कोई भी व्यक्ति अपने रोज़ की भाग दौड़ वाली जिन्दगी में प्रेम, ममत्व, स्नेह, सुरक्षा, ऊर्जावान रिश्ते चाहता है। वह एक ऐसा घर चाहता है जहाँ उस घर में रहने वाले लोगो के बीच आपसी सम्बन्ध मधुर, परिपक्व, ऊर्जावान हो। परन्तु इस कविता में जिस घर का उल्लेख किया है उसकी अपनी त्रासदी है। त्रासदी यह है कि उस घर के लोगों के बीच आपस में सवांदहीनता की दीवार खिंच गई है। इस संवादहीनता का कारण गरीबी है। ऐसा नहीं है कि ये परिवार पैसे की ओर आकर्षित या धन का लालच रखता है। बल्कि सच तो यह है कि परिवार के सभी सदस्यों को एक–दूसरे की मजबूरी और लाचारी को जानते हैं, समझते हैं। इसलिए वे एक–दूसरे से बोलते नहीं है। यह परिवार गरीबी से लड़ते–लड़ते इतना ऊर्जाहीन, दीन–हीन जर्जर हो गया है कि आपसी रिश्तों को जीवित रखने के लिए जिस संवाद

और ऊर्जा की आवश्यकता होती है, वह समाप्त हो चुकी है। परिवार में पाँच सदस्य है। सभी के बीच खून का रिश्ता है, परन्तु गरीबी के कारण ये सभी अपने मन के भावों को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाते हैं। ये संवादहीनता इनके बीच आपस में भाषा रूपी जर्जर ताले को खोल भी नहीं पाती है। यहाँ तक कि ये आपस में एक–दूसरे के प्रति अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों को भी गरीबी के कारण पूरा कर पाने में असमर्थ हैं। गरीबी इनके रिश्तों को आपस में जिन्दा रखने में सबसे बड़ी बाधक है।

घर में वापसी

मूलभाव – यह कविता गरीबी से संघर्ष करते हुए परिवार की व्यथा–कथा है। प्रत्येक मनुष्य संसार की भागम भाग भरी जिन्दगी से राहत पाने के लिए स्नेह , अपनत्व और सुरक्षा भरे वातावरण में घर बनाता है और उसमें रहता है। लेकिन विडम्बना यह है कि तमाम रिश्ते–नातों, स्नेह और अपनत्व के बीच गरीबी की दीवार खड़ी हो जाती है। गरीबी से लड़ते–लड़ते अब इतनी भी ताकत नहीं रही कि रिश्तों में मधुरता लाने के लिए कोई चाबी बनाई जाए जो इस जटिल ताले को खोल सकें।

कवि ने एक ऐसे घर की कामना की हैं, जहाँ गरीबी दीवार की भाँति बाधक न हो और परिवार के सभी सदस्य प्रेमपूर्ण वातावरण में रहते हुए सुख प्राप्त कर सकें।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

वैसे हम स्वजन हैं.....भाषा के भुन्न–सी ताले को खोलते।

प्रसंग– कवि – 'धूमिल' जी

कविता – 'घर में वापसी'

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि यह बताना चाहता है कि यद्यपि हमारा परिवार गरीब है। तथापि हम स्वजन है। अर्थात् हम करीबी रिश्तेदार हैं हमारे रिश्ते मधुर हैं। आज भी गरीबी होने के बावजूद हम सभी में आत्मीयता बनी हुई है। परन्तु फिर भी हमारे रिश्तों के बीच गरीबी की दीवार है। जिसके कारण हम आपस में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाते हैं। गरीबी के कारण रिश्तों में उपस्थित संवादहीनता के कारण हम सभी पारिवारिक सदस्य आपस में न तो बोल पाते हैं और न ही एक–दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभा पाते हैं। प्रत्येक सदस्य पर एक मानसिक दबाव काम कर रहा है। जिसका कारण ये गरीबी और उससे उत्पन्न संवादहीनता है। यह गरीबी परिवार को विरासत में मिली है वे जन्मजात गरीब है। परिवार का कोई भी सदस्य अपने विचारों को इसी कारण प्रकट नहीं करता क्योंकि वे सभी आपस में एक–दूसरे की मजबूरी समझते हैं। आपसी रिश्तों की ऊर्जा व गर्मी बिल्कुल समाप्त हो गई है। आगे कवि कहता है कि रिश्तों में आपस में इतनी भी ऊर्जा

नहीं बची जिससे कि इनके बीच जंग खाई भाषा रूपी ताले को खोला जा सके अर्थात् ये आपस में संवाद की परम्परा को शुरू कर सके।

शिल्प सौंदर्य–

1. भाषा सरल सहज है।
2. भाषा में चित्रात्मकता है।
3. गरीबी का यथार्थ चित्रण है।
4. खड़ी बोली है।
5. आधुनिक जीवन में पैसों का रिश्तों पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसका सटीक और सही वर्णन है।
6. कविता आज के सबसे संवेदनशील मुद्दों को उठाती है।
7. मुक्त छंद की कविता है।
8. भाषा का भुन्ना–सी ताला–रूपक अलंकार।
9. नवीन उपमान का प्रयोग।

कविता पर आधारित प्रश्न उत्तर–

1. माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही तीर्थ यात्रा की बस के दो पंचर पहिए हैं। कैसे?

उत्तर– कवि सुदामा पांडेय धूमिल ने माँ की आँखों को तीर्थ यात्रा की बस के दो पहिए कहा है। पड़ाव शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक है वह मृत्यु का प्रतीक है। 'दो पंचर पहिए' का प्रतीकार्थ है ज्योति विहिन दो आँखें। अपेक्षित गंतव्य तक न पहुँच पाने की यातना 'पंचर पहिए' से व्यक्त होती है।

2. पिता की आँखें लोह साँय की ठंडी सलाखें हैं से क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर– कवि ने पिता की आँखों को 'लोह साँय की ठंडी सलाखें' बताया हैं यह उपमान प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है। यौवनावस्था में पिता तेजस्वी और रौबदार रहे होंगे पर बुढ़ापे और गरीबी ने उनके तेज को उनसे छीन लिया है उनका उत्साह ठंडा पड़ चुका है। भाषा सहज, सरल, भावपूर्ण है।

काव्य सौंदर्य –

भाव पक्ष – प्रस्तुत कविता में कवि में गरीबी की विवशता भरी जिन्दगी का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। गरीबी के कारण परिवार में आए बिखराव और अलगाव का भावपूर्ण चित्र उपस्थित किया गया है। कवि के हृदय में गरीबी के कारण आए

बिखराव और अलगाव का भावपूर्ण चित्र उपस्थित किया गया है। कवि के हृदय में गरीबी के कारण आए बिखराव को जोड़ने की तीव्र इच्छा है।

शिल्प–सौंदर्य –

1. कवि ने प्रतीकात्मकता और लाक्षणिकता से युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
2. भाषा में करीब, गरीब आदि उर्दू शब्दों के प्रयोग से व्यावहारिकता आ गई है भाषा में चित्रात्मकता का समावेश है।
3. मुक्त छंद में लिखी गई कविता है।
4. सर्वथा नवीन उपमानों का प्रयोग है।
5. 'पंचर पहिए', 'पड़ाव से पहले', 'भाषा के भुन्नासी' में अनुप्रास अलंकार है।
6. भाषा का भुन्नासी ताला बड़ा ही सुन्दर रूपक है।
7. 'जोखिम उठाना' मुहावरें का सटीक प्रयोग है।
8. मुक्त छंद प्रयोग किया गया है।

अभ्यास प्रश्न–

1. कवि परिवार के पाँच सदस्यों को पाँच जोड़ी आँखें क्यों मानता हैं?
2. 'पत्नी की आँखें–आँखें नहीं, हाथ हैं, जो मुझे थामे हुए हैं। से कवि का क्या आशय हैं?
3. 'वैसे हम स्वजन है, करीब है.....क्योंकि हम पेशेवर गरीब है। से कवि क्या कहना चाह रहा है?
4. 'रिश्ते हैं लेकिन खुलते नहीं'– कवि के सामने ऐसी कौन–सी विवशता है जिससे आपसी रिश्ते भी नहीं खुलते ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य लिखिए–
   क) माँ की आँखे पड़ाव से पहले की तीर्थ–यात्रा की बस के दो पंचर पहिए हैं
   ख) पिता की आँखे लोह साँय की ठंडी सलाखें हैं।
6. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–
   क) वैसे तो हम स्वजन है.....पेशेवर गरीब है।
   ख) रिश्ते हैं.....यह मेरा घर हैं।
7. कवि ने भुन्नासी ताले किसे कहा है?